ज्ञान संप्रदायके संत और यनुयायी के लिए

नित्य नियम उपासना

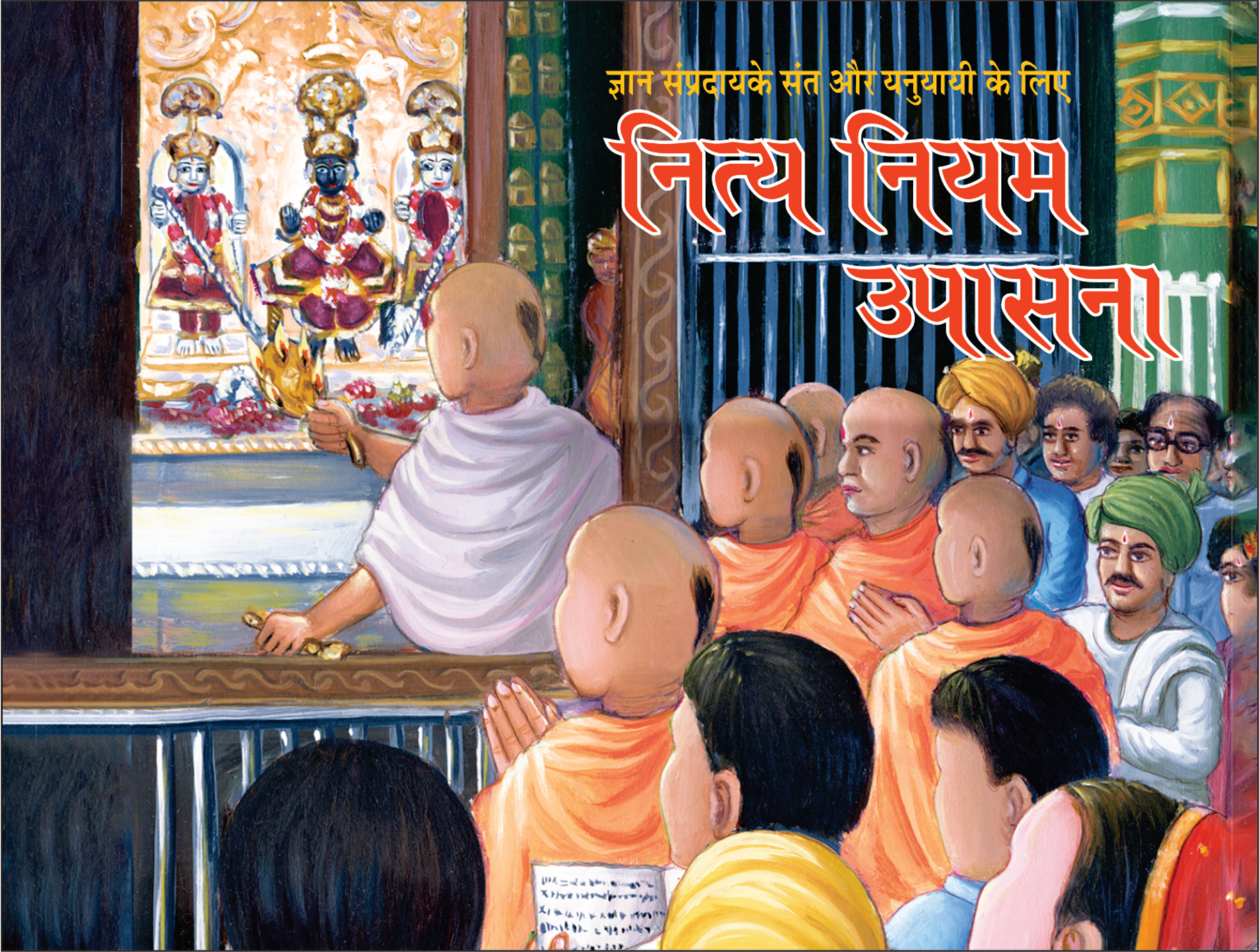

अनंत ब्रह्मांडाधीश सकर्ता सर्जनहारके

पंच विशेषण

आद्य, सक्रत, स्वराज, करुणेश,
कैवल कर्ता त्वं नमामी

ॐ साम्रथ कैवल दिव्य द्रिग साक्षीवत् आदी कर्ता कृपानिध्ये प्रणतः
कलेशनाशाय अनंताय नमो नमः

अनंत ब्रह्मांडाधीश सकर्ता सर्जनहारका
सजाण जाण स्वरूप परमविशेष पाटवी अंश

श्रीमत् करुणासागर

त्वं नमामी

मेरो तन चैतन चिद् रुपा, सो तुमकु कह्यो लक्ष अनुपा;
तब तेही लक्ष रहो चित्त प्रोई, चरमदेही मम तजो सनेही.

॥ श्री परमगुरवे नमः ॥

नित्य नियम उपासना पाठ

प्रकाशक
भजनानंद पब्लिकेशन
विश्व सर्वजनमंगल चेरिटी ट्रस्ट,
9–10 सत्यम एपार्टमेन्ट, वकीलवाडी, मणिनगर,
अमदावाद, गुजरात 38008

नित्य नियम उपासना पाठ

1st Edition: June 2020
Price: Rs. 15/-

कोपीराईट © विश्व सर्वजनमंगल चेरिटी ट्रस्ट,

पुस्तक प्राप्ति स्थान
श्वसंमवेद ज्ञान केन्द्र
संत श्रीजनकदासजी गुरु श्री गोर्धनदासजी
मु.पो. आलमपुर, ता.जी. गांधीनगर–382042
M: +19 9824025294
email: janakdasji2274@gmail.com

email: bshah6900@gmail.com
website: www.kaivalgyan.org

विषयसूची

संत हरिजन प्रणिपतनमस्कार विधि १
संत हरिजन की रहेश विधि–भजन विधि..... २
प्रभात पद १–१० ..... ८–२७
मंगल पद १–९..... २९–४१
भाल तिलक माहात्म्य..... ४३
भीतर भाल तिलक माहात्म्य ४६
कैवलवेत्ता स्तुति ४८
प्रांतःकाल उपासना – मंगला आरती ५२
शणगार आरती..... ५४
कर्ता स्तुति..... ५७
परिक्रमा १–४ ..... ६३–७०

गुरु स्तुति ७३
गुरु महिमा ८२
सायंकाल उपासना विधि – गुरु महिमा साखी ११३
गोड़ी पद १–१० ..... ११६–१४८
संध्या साखी १५०
संध्या आरती १५४
संध्या स्तुति १५७
पोढण आरती १५८
भोजन समय की धुन १६०
कथा स्तुति १ ..... १६४
कैवल कर्ताकी स्तुति १६७
कथा स्तुति २ ..... १६८
श्रीमत् करुणासागराष्टकम् १७१

संत हरिजन प्रणिपतनमस्कार विधि

(अगाध बोध अंग-८२)

दंडवत की कहु अब रीति, हरिजन संत मिलन की नीति;
सत् कैवल साहेब कहेना जनकु, सत् साम्रथ जीलना संतनकु. १
ओरु हरिजन हरिजन का मिलना, सो कहु वचन सजन के आधीना;
सत् कैवल परमात्म कहेना, एक एक पे हलीमली रंग भीना. २
संत संत मिलन की बानी, सो भी पण कही देऊ निदानी;
अहो जय कैवल हंसा करही, सनमुख होय अन्यो अन्य उचरही. ३

संत हरिजन की रहेश विधि-भजन विधि

अबके कहत उपासना बरनी, रहे सकल गत्य नारी नरनी;
गुरु के बोध बचन चित्त धरना, लक्ष आराधन अहोनिश करना. १
भोर भये प्रगटे जब भानु, सावधान थवु करी स्नानु;
आसन दृढ करी समदम देहा, विश्व विलास हास तजी नेहा. २
सुरत नूरत करके एकतारा, हरदे ध्यान कैवल किरतारा;
गुरुलक्ष जाप मंत्र तेही जपना, इन्द्रि भोग सब सुख तजी स्वप्ना. ३
स्थूल सूक्ष्म कारण तन जेही, महाकारण पर परम विदेही;
परमविदेही सोही निज आप रूपा, सो निश्चे करी तत्त्व अनूपा. ४

जड तन तजी लक्ष विविध विभागा, चैतन लक्ष चितवन अनुरागा;
मकरतार दोरी दम स्वासा, ता मध्ये कैवल हंस निवासा. ५
सो हंसा आपनु निज आपु, दरस परे एही ध्यान प्रतापु;
जब दरसे हंसा एही ध्यानु, तब अनुभव उर होय अविलानु. ६
जब अनुभव उर प्रगटे करता, इंड पिंड फोडी जाय सुरता;
जई कैवल निज पदकु परसे, दिव्य दृष्ट यांहां वांहां सब दरसे. ७
एही परकार ध्यान नित्य करना, मुक्तरूप होय विश्व विचरना;
आसन सम खट घडी तीन नेमु, चंचल चित्त मन वश करी धेमु. ८
द्वे सहेस्तर सत साठही जापु, घड़ी खटके होय स्वास समापु;
सूनो मम संत उपासना मर्मु, अहोनिश करो एही तजी ओर भरमु. ९

अगम उपास सो कही संतनकु, सुगम उपास कहु हरिजनकु;
करी स्नान भान जब उदही, मन मंजन अंतर करी सुधही. १०
आसन दृढ एकांत जमाई, गुरु चरनन परथम लेहेलाई;
बोहोरु कहे गुरु जेही निज जापु, सो जपीये तजी तन मन आपु. ११
युगल घडी जतमत सत् रहेना, सुरत नुरत उनमुनि चित्त देना;
जाप सप्त से वीस जपाई, युगल घड़ी तब पूरण थाई. १२
एही परकार ध्यान नित्य धर ही, तब हरिजन नरनार उधर ही;
ओरु तिनसे पुनि सूक्ष्म टेकु, लघु हरिजन कहु ध्यान धरेकु. १३
सहेज स्वभाव चहाव गुरु चरना, कैवल कैवल जाप उचरना;
करी स्नान ध्यान उर गुरु का, सहेज दशा साधन हरु भरुका. १४

ऊठत बेठत हरतां फरतां, संतन की सेवा रहीये करतां;
सहेज उपासन सूक्ष्म जनकी, सोही पण पावत गति सरजन की. १५
काम क्रोध मोह तजी अहंकारा, हरख शोक अभिमान विकारा;
शीलवंत लक्षे निशदिन ही, सो साचे हमेरे हरिजन ही. १६
त्रधा प्रकार उपासना बरनी, संत सहित ओरु नारी नरनी;
रहेश कहु हरिजन संतन की, जेही रहेश गति होय अगम की. १७
जूठ प्रपंच चोरी ओरू हेरी, हरिजन सो उन रहे न नेरी;
जीव दशा वरतत जुग रीति, अलग रहे तिनसे तजी प्रीति. १८
साकूट संग न करही मेलापु, जीन संगे बढे शोक संतापु;
जीव की शीख हरदे नव धरही, आपनो बोध औरनकु करही. १९

बूरी भली के निकट न रहीये, हरिजन संग सदा निरवहिये;
साधन रहेश क्षेत्र धामन की, कही उपास संत हरिजन की. २०
अहोनिश रहे एही जन जतमत ही, तब पावे कैवल पद गतही;
कहे कुवेर सूनो जन संतु, एही मम बोध रहो चित्तवंतु. २१
हंग सचेत होत गति रब से, जेही आपनपु ओई;
तेही आपनपु अहंग हंग मिली, क्रता हंग लहे सोई. २२
क्रता हंग दिव्य छत्र सोहंग शिर, अहंग हंग अपने ही;
उभय हंग मिलीत हलमल रत, उमंग देह सबेही. २३
जीनमें आपना आप हंग को, सावधान होई सजही;
अलग अनुप अंश द्वैतन से, क्रता हंगकु भजही. २४

तेही भजन निजपति परमकु, अंगिक्रत होय सोई;
अन्य नाम जेही सहस्त्र आद्य जप, खुदकु पुगे न कोई. २५
तेही पतिसे अब अहंग नमामि में, सुरत नूरत एकतासु;
जेही सकल के परम पुरातन, भजत पुरीत अभिलासु. २६
ओर भजन से काज सरत नहि, निजपति विना कबेही;
सदा अखंड विना कोण करे काज, जेही मरी गये सबेही. २७
अब तुम तेही लक्ष रखो अभ्यासु, तो हम सदा तुम्हारी पासु;
मोहेर मंत्र जम वश होय सरपु, तीम एही जाप सकल में समरपु. २८
कहे कुवेर हम अकल नरेशा, भवतारण धारे तन भेषा. २९

प्रभात पद १

मूक्यने कल्पना जलपना मन तणी,
तुज विना आन्य नहि कोई दूजो;
तीरथ व्रत ने जोग जगन जप,
तप करी मागतो तहारुं तुंजो. मूक्य ने...१
निद्राना सुपनमें राजा भिक्षुक थयो,
जाचवा आपने द्वार ऊभो;
सुपनुं समाई गयुं, जाग्रत सुख लह्युं,
ज्यम हतुं त्यम थयुं आप सुबो. मूक्य ने...२

तम पद सात्त्विक स्वरूप स्वामी तणुं,
रजोगुण रसबस लुंबो झुंबो;
द्वादश द्वारनुं सार मंदिर रच्युं,
घटघट खटरस लेवा चुंबो. मूक्य ने...३
जीव तुं शिव तुं, काल किरतार तुं,
कालना कालमे तोय बुज्यो;
कहे कुवेर अज्ञान अंधेर टळे,
गुरुगम दृष्टि ए मोय सुज्यो. मूक्य ने...४

प्रभात पद २

शुं कहीए जंत ने ओळख्या नहि कंथने,
सेव्या नहि संत ने मान मूकी;
भक्तिपद मुक्तिनी जुक्ति जाणी नहि,
लंपट नरतणी बुध्य टूंकी. शुं कहीए...१
अनेक विगत्ये कथी सकल शाहास्तर मथी,
वाणी परमारथी निगम साखी;
शठ ने शिखामण तोय लागी नहि,
कही कवि पंडित थाक्या ऋषि. शुं कहीए...२

नव लहे मूळ गति रतिपतिनी मति,
मायानो स्वारथी वरणमुखी;
कहे कुवेर निज नाम भजन बिना,
कोई नर जक्त में होय ना सुखी. शुं कहीए...३

प्रभात पद ३

संत किरपा विना सुक्रित नव सरे,
दुक्रित जाय नहि देह केरूं;
हरखने शोक संताप अति संभवे,
दंभवे दुरमति लोक हेरुं. संत किरपा...१

जीवपणुं अति घणुं जुगल नरनारनुं,
अहंपद आपनुं दिर्घ डहेरू;
खबर नहि जंतने तंतुना अंतनी,
संचित द्रव्य करे मेरु मेरु. संत किरपा...२
धरम आगे धरे करम कंठे करे,
पापने नव कहे आय नेरूं;
सत् कुवेर कहे मूढ कांई नव लहे,
पुन्य तांहां पाप ना होय भेरुं. संत किरपा...३

प्रभात पद ४

निरखने निरमल दृष्टिए नूरने,
ब्रह्मनो भास ते विश्व मांही;
सूरत नूरते करी गुरुगम उर धरी,
साव निरंतर एक सांई. निरख ने...१
वापी ने कूप तडाग नीरे भर्यां,
चंद्र ने सूरज तेज तांही;
बहार किलाहार किलोल क्रीडा करे,
अचल अडोल आकाश मांही. निरख ने...२

जीव ने शिव ते बांध्या कर्मे करी,
चैतन एक ते विश्वमांही;
विविध विगते करूं जे जेम तेम वरूं,
भिन्न-भिन्न भेद ते भात मांही. निरख ने...३
क्षिति पावक जल पवन आकाश मां,
तेजमां तत्त्व तुं साक्षी मांही;
सत् कुवेर कहे तुंज विलसी रह्यो,
तुंज विना आन्य ते कांई नांही. निरख ने...४

प्रभात पद ५

आद्य मध्य अंत कैवल सर्वोपरी,
ते हरि हुं वरी सत् सोई;
करम नो भरम ते मरम समझे सम्यो,
जक्त जंजालनी आळ खोई. आद्य मध्य...१
अन्तःकरणनी चतुर चोरी रची,
विप्र गुरु धून्य मची समे व्रताई;
शब्द शरणाई भव भाव भुंगल बजी,
शोक संशे तजी हरख होई. आद्य मध्य...२

मन वश मींढल लक्ष दोरो मही,
प्रेम पीठी चढ़ी अंग मोई;
सत् दृढ़ नेम दो छेड़ला गांठीया,
सूरति संधाण वरमाळ प्रोई. आद्य मध्य...३
मनोरथ मांची मम हरि बुज बाजट,
ओहंग ने सोहंग मल्या हस्त दोई;
ओहंग भुज माहेरो सोहंग हरिनो कर,
अलख इच्छा वर भाग्य मोई. आद्य मध्य...४
ब्रह्म अग्नि जग्यो चित्त चॉरी मध्ये,
संकल्प श्रीफळ होम होई;

ज्ञान ने ध्यान वैराग भक्ति पद,
मंगळ वरतीया चार ओई. आद्य मध्य...५
करुणा कंसार करुणाकरे कर लीयो,
वदन म्हारे दीयो मदन गोई;
शीश समर्पण वळी में कलवो लीयो,
हरि मुख में दीयो लाज लोई. आद्य मध्य...६
धर्म अर्थ काम ने मोक्ष मुगति वळी,
भामनीयां मळी अष्ट ओई;
गावत धोळ आनंद अनुभव अति,
जती सती जाननुं मन मोई. आद्य मध्य...१

पुरण परणी हरि कारज गयुं सरी,
जनम ने मरणनी खटक खोई;
कहे कुवेर अविचल ग्रहे सूत्रनुं,
सुख मुख से जो कही शकु न कोई. आद्य मध्य...८

प्रभात पद ६

कवन कारण हवे जोग जप तप करुं,
ध्यान जेहेनुं धरुं तेज पामी;
निगम कहे अगम निरालंब निरगुण पद,
सो सद् सत्गुरु रूप स्वामी. कवन कारण...१

वेद वेदान्त पुराण खट शाहास्तर,
व्यास विनंती करी थकीत हामी;
तेज परमेश्वर परम प्रगट लह्यो,
नव कह्यो जाय अविगत अनामी. कवन कारण...२
सुनक सुखदेव सिद्ध नारद कपिल दत्त,
कबीर सत् पाये जे पद विरामी;
संत सरव साख्य संजुक्त भई मुक्त मम,
देश डंको नहि वात छानी. कवन कारण...३
चैतन आप चिद्रुप चित्त सनमुख,
धसमस्यो उर वस्यो गगन गामी;

कहे कुवेर किरपा निधि कैवल,
संग छोड़े नहि सोहंग कामी. कवन कारण...४

प्रभात पद ७

कोटि जनमं तनुं पुन्य प्रगट हवुं,
आज अचरज नवुं भाग्य महारे;
अनंत ब्रह्मांडनुं भरणपोषण करे,
ते हरि उर धरे नेह लहारे. कोटि...१
त्रिगुणातीत पद दुर्लभ देवने,
शेष विरंचि शिव ध्यान धारे;

अच्युत अव्यक्त विव्यक्त ते वर्जित,
प्रणव पाण्य मम कंठ डारे. कोटि...२
अंश उछाहनी चाह भई कामनी,
भामनी भाव धरी करे विहारे;
लेत आलिंगन परस परमात्मा,
त्रियातन पलपल ना विसारे. कोटि...३
आप अद्वैत रही द्वैत संगे रमे,
विश्व विलासमें वारे वारे;
निज अनुकरमनो मरम जन जो लहे,
फरक कर्ता सदा जो विचारे. कोटि...४

भवजल भरममे अंश अनवे गति,
आपमे आपको तरे ने तारे;
डूबते नरनकु तिरइ तारणवत,
अलग कर्ता विना को ओधारे. कोटि...५
अविगत अकल करतार करुणामये,
सद्गुरु से लहे सद्विचारे;
कहे कुवेर भव फेर फारगत भई,
परमपद मिलही भयो सकारे. कोटि...६

प्रभात पद ८

सकल वैभवतणुं कारज हवे सर्युं,
सच्चिदानंद आनंद वरतुं;
पिंड ब्रह्मांडनुं सूत्र सम शोधतां,
बोधतां बुद्ध अघाद करतुं. सकल...१
स्थावर जंगम विश्व चराचर,
जड़ चैतन सरतुं ने नरतुं;
वस्तु विचारतां विविध वग नव रह्युं,
अखिल भव अंशनो आद्य धरतुं. सकल...२

जीव ने शिव कैवल कारण लहुं,
पुन्य ने पाप अवतरतुं ने मरतुं;
स्थाप उथाप मन व्याप समझे सम्यो,
जक्त जंजाल उर आळ धरतुं. सकल...३
अंश असमी अजभव विषे भोगियो,
जोगियो जतमत तेज सरतुं;
कहे कुवेर यांहां युगल अविलोकतां,
हुं ताहारी मोजने आद्य सरतुं. सकल...४

प्रभात पद ९

मोज म्हेमंत अलमस्त अनभे फरूं,
दीन उर नव धरूं भिन्न भागी;
अगम अद्वैत में द्वैत एकतापणुं,
ज्ञान गुणातीत तणुं भान त्यागी. मोज...१
विश्व विलास अतिहास अनवेगति,
रतिपतिनी मति प्रेम पागी;
अन्तःकरण गुण इन्द्रि एकादश,
सहित प्रक्रत मम व्रहीत जागी. मोज...२

कीट पतंग अज विष्णु एकी वगे,
वस्तु जोतां उदे अस्त आगी;
शिवशक्ति पुनि शेष सत् ईश्वर,
पुष्टि प्रक्रत भई प्रत पागी. मोज...३
वेष विचित्र बहु भात विविध विध्य,
लक्ष जोतां नहीं पक्ष रागी;
स्वे सर्वज्ञ तन अहंग अनभे जगी,
द्वेष दुतीयो दधि स्वेत जागी. मोज...४
एकोहंग व्यापि दूति नास्ति क्रष्ने कह्युं,
ईश पर शुं रह्युं जुओने जागी;

कहे कुवेर सर्व सार सिद्धान्त ए,
निजपति परम सुध कोहु न लागी. मोज...५

प्रभात पद १०

भरम तजी भाव धरो भुरचां मानवी,
जानवी गुरु लक्षे ज्ञान झीलो;
ज्ञानगंगा तणुं परसतां पारखुं,
अहंग उद्योत अघ भरम भूलो. भरम...१
काम ने क्रोध मन व्रोध अहंकार मद,
सो सद परहरी प्रेम पीलो;

रात दिन रसबस एकता अनुसरो,
ध्यान हरदे धरो मान मेलो. भरम...२
निजपति परम परपंचनी पर सदा,
रच मदा ते सदा रहे अकीलो;
अलख अमाप लख माप ममता धरी,
खिल चहु अंश थई खलक खीलयो. भरम...३
सकल सिद्धांतनुं सार संतो कने,
प्रिछवा पेर त्हां मन महेलो;
परमअरथी सदा संत अमी अरणव,
प्रणव पुरुष परसावे वहेलो. भरम...४

आप निज अंश करतारनो लक्ष जे,
सत्गुरु अरथ दे त्रत सहेलो;
कहे कुवेर जंजाल जन तुं टळे,
जई मळे जहाँ हूतो पूरव पहेलो. भरम...५

मंगल पद १

शुद्ध सत्गुरु शब्द विचार, जाहेर मन माहेरा;
जोने अहंग आप निजरूप, अनोपम ताहेरा. १
स्वामी अविगत आप अव्यक्त, शक्त जेहेनी सर्व में;
अविनाशी तो अकल अरूप, आवे नहीं ग्रभ में. २

भिन्ना भिन्न दिसे जेनो अंश, तंतुना भेद में;
घाट निमित्त मृत्युनी मांय, आवे नहीं छेद में. ३
रवि चन्द्र दृष्टांत ने जोय, प्रतिबिंब भंडिता;
निरपात्र उभये विलसाय, ज्योत नहि खंडिता. ४
जेहेनी उतपत परले नहि नाश, वास अविकास हे;
ते तो ज्यमनो ज्यम सदाय, स्वे परकाश हे. ५
सहेजानंद आनंद अबंध, पुरातन रह्यो जथा;
सत् कुवेर ने दरश्या सोय, मिट्या सर्वे मन मता. ६

मंगल पद २

मन मंगल आनंद रूप, भया तब जाणही;
जेहनो शब्द विवेक विचार, संत परमाण ही. १
तेणे पांच पचीस परास, आस उलटी करी;
तेने रोम रोम ररंकार, रटत हे हरि हरि. २
जेने बोलत ही बुद्धि होय, शुद्ध सामा जीवकु;
तेने प्रगटे उर अहंमेव, लेवाने पिवकु. ३
जेनी वाणी तणो विस्तार, अलक्षना लक्षनी;
छूटे जीव शिव संशे भ्रान्त, के पक्षा पक्षनी. ४

जेने अनुभव आठे पहोर, खोज पद परमनी;
तेने व्यापी शके नहि कांय, कल्पना करमनी. ५
जेने मन, बुद्धि चित्त अहंकार, चार अन्त:करण;
तेथी निरवरत्या निजदास, आश हरि के शरण. ६
परमानंद आनंद ने जोई, बुद्धि सर्व विसरी;
भई सुरत नुरत एकतार, कुवेर नव नीसरी. ७

मंगल पद ३

परमानंद सागर सोय, सदा लगी झीलिये;
सुधा अमृत तपे अतिसार, पिवाय तेम पिजीये. १

जेना अणुने सोमे भाग, नवे निध्य सिध्यने;
नव पहोंचे सुरेश लगार, कहुं कई विध्यने. २
जेना चितवन में जुग चार, सार कीला करे;
समे चितवन चारु महांय, कांय नव उगरे. ३
जेना रोम तणो परकाश, वास सुख रह्यो संगे;
जेमां वर्ते चौदेय लोक, सुरीनर अज लगे. ४
कोटि रवि शशि तेज उद्योत, शोभा नक्षनी सही;
स्वामी अपरमपार अलेख, अलप उपमा सही. ५
जेहनो वार पार नहीं अंत, संत सरवे कहे;
कहे कुवेर अलप मती जीव, महिमा ते शुं लहे. ६

मंगल पद ४

एवा साहेब पामवा सार, संतोने सेवीए;
सरे कारज किंचित एक, पूजा फल देवीए. १
गुरुज्ञान ध्यान अविलान, अहोनिश किजिये;
आठे पहोर अंग उमंग, परम रस पीजिये. २
तेने नव रहे जीव जंजाल, पाल मनने विषे;
नव व्यापे राग ने द्वेष, रहे सतगुरु पखे. ३
तेनुं समरण शुध्ध विचार, संत निश्चे कर्या;
कोटी विष्णु अनंत अपार, एही विधि ओधर्या. ४

एवी साख्य सकलनी जोई, मोई दृढ़ता भई;
सत् कुवेर गुरुना चरण, छोडी नव जाय कई. ५

मंगल पद ५

खोजो गुरुगम वारंवार, सार सुख पामवा;
राखो उर अंतर अहंमेव, भव दुःख वामवा. १
शिख सहस्त्र जनमनी होय, हरि तेमां गति;
तेने प्रगटे व्रेह वैराग, आवे शुद्ध गुरुगति. २
जेहने अजपद ने कैलास, वास मन नव छके;

सुख चौद लोकनुं जेह, तृणावत् करी लखे. ३
तेनी बुद्धि बेग बिलाहार, जाहेर थई झूझवे;
जेना ज्ञान खडगनो घाव, कोई नव रुझवे. ४
ज्ञान खडक घावनी पीर, धिर कोई नव धरे;
सत् कुवेर गुरु परताप, शब्द सन्मुख लरे. ५

मंगल पद ६

लागी ज्ञान शब्द की चोट, ओट किसकी ग्रहुं;
तोडी अज्ञान आवरण ढाल, जीव तो क्यम रहुं. १
संगी मार्या पाँच पचीस, शिश सब छेदिया;
कायानगर की म्हांय, अमल गुरु का भेदिया. २

किनी दश दरवाजे सहाय, जाय चोकी बेसवा;
काम क्रोध लोभ मद चोर, देवे नहीं पेसवा. ३
किनी कबजे चारू वरण, अमल आपको कर्यो;
हार्यो कायानगरनो राय, गुरु चरणे पड्यो. ४
एहवी निष्ठ नमणता जोई, गुरु राय रीझिया;
करी करुणा कुवेर शिर हाथ, फेरी राज दीजिया. ५

मंगल पद ७

शुद्ध समज विवेक वजीर, धीर जोई आपीयो;
कर्यो कुबुद्धि उचाकर जेह, आगे हुतो पापीयो. १

दियो दया जाणीने दयाल, धरम कोटवाळकु;
कियो काम करावन एह, नगर रखवाळकु. २
शिल सहेज संतोषने सत्त्व, श्यामना संगना;
दिना पलंग पटावत चार, आपना अंगना. ३
किनो सनमान शुद्ध सहुकार, कार नाणां तणो;
जोये खरचवा वापरवा जेह, द्रव्य आपे घणो. ४
सौ शहेर कर्युं सुखराज, नव निध्य सिध्यमे;
तब फर गयी सत् दवाई, राई रस रिध्यमें. ५
कीनो अमल अनेरो राय, काम सब केजमें;
सत् कुवेर आत्म आप राय, सुता सुख सेजमें. ६

मंगल पद ८

जेहने इंगला पिंगला नार, सुक्ष्मणा शाहने;
ढोले व्रेहे वेझणीये वाय, स्वामी सुखदायने. १
चोथी सुरती सोहागण जेह, नेह करे नाथ सु;
धरी तन मन जीवन प्राण, ताळी ले हाथ सु. २
नेक नुरती लगावे नैन, बेन रस रिध्धनां;
करे पलक पलक पियु प्रेम, पोतानी जीत्यनां. ३
सुध्य वरती सोहागण नार, प्यार पियुने घणी;
लहे हेल्ला मात्रनी म्हांय, हरिनुं मन हणी. ४

बुद्धि शुद्धि निधि सरव लेइ, पूजाने कारणे;
लावे नित्य प्रति वारंवार, धरी मन धारणे. ५
भक्ति मुक्ति जुक्तिनी जाण, पाण्य जोड़ीने रही;
करे सेवा स्वामीनी सदाय, नार दशधा सही. ६
सिद्धि खट दश पंचने दोय, दीसे एनी दासीयो;
निधि पंच चतुरधा सोय, सेवाने खासीयो. ७
मळी सर्व सुलक्षणा नार, विहार हरिसु करे;
कहे कुवेर आतम अणलंग, रंगथी रहे परे. ८

मंगल पद ९

रंग अंग आतमनी संग, कहुं दृष्टांतसे;
देखी वरुण शीतल विधि होय, दृश्य सुरक्रान्तसे. १
साख्य आन्य बतावुं सोय, संशे सरव निसरे;
नव रहे अंतर एक लगार, समझ शुद्धि परे. २
राखी चमक पटंतरे काच, लोहा पुतळी धरी;
नहि चमक ने चितवन कांय, चैतन थई परवरी. ३
जई खाप रही खटकाई, सांई भेट्यो नहि;
धातु पुतली रूपरंग सहित, रही अही नी अहीं. ४

काच चमक बीचे फरे पाण्य, आण्य पल में परे;
छोड़ी काच कामीनी त्यांय, कांई लटकां करे. ५
देखी चमक चपलता नार, प्यार पियुने सही;
एनो सनेह शिरोमणी सार, चमकने चितवन नहीं. ६
स्वामी सम्यक रह्यो समतोल, ओल मन मायने;
नीचे वर्ते सहु संसार, साम्रथनी सहाय ने. ७
घाट निमित्त मृत्यु करे काळ, पाळ पल में परे;
ताते वृद्धि पामे संसार, मरे ने अवतरे. ८
नव मंगळ नव निधि ज्ञान, ध्यान हरदे धरे;
उत्कृष्टपणे पति पाय, कुवेर जे परम परे. ९

भाल तिलक माहात्म्य

भाल तिलक ओर भजन कैवल का,
जमजूथ कुल नहि डरप अमल का;
तिलक भाल अनुभव ऐही निरणु,
महिमा अतुल गति काहा मम बरणुं;
जाहिते संबंध निज पद अनुरागा,
क्यों न करहि तेहि तिलक अभागा;
निज पद लक्ष कैवल सद सोई,
ताहि के तिलक भाल कहेहु जे मोई. २

तिलक भाल भवतनकु वेधे,
अणी अग्र कालज कर्म छेदे;
कैवल पद भक्ति जीनुं जानी,
तिलक भाल तनु अंक निशानी. ३
कहुं जिनुं वरण तिलक रंग वेशा,
रक्त स्वेत उभय अणी रेषा;
अब तुम संत सकल मम दासु,
धरो एही तिलक निःशंक निसवासु. ४
अति द्रढ़ अडंग मते मस्ताने,
फरो फंद फरक तरक जग जाने;

निडर निहंग सिंघ सम साधु,
रहो उत्कृष्ट सृष्ट मही बाधु. ५
एही विधि विचरत नर ओरु नारी,
सोही जन कैवल पद अधिकारी;
तेहि अधिकार सार श्रुति अंतु,
याहिते अधिक नहि पद परमंतु. ६
एही निज तिलक निरूपण,
खुद घरका शिर तोर;
तेही तजी ओरू तन अरचही,
निज पतिन के अति चोर. ७

भीतर भाल तिलक माहात्म्य

त्रधा त्रिवेणी ललाट ही ज्योति,
ए उपले आकार उद्योति;
अब कही देवुं भीतर भल भेदु,
तिलक भाल समजण गत वेदु. 1
चन्द्र सूर होय त्रिवेणी सम्बन्धा,
जब प्रकृति स्वांत पाये धंधा;
नेन नासिका त्रिये तंत सारा,
तब सुलजे निज लक्ष विचारा. २

सोई त्रिये तन मिली तिलक ही भालु,
त्रिकुटी मध्य कीयो त्रधा विशालु;
अनी अग्र सोई अनी निकासी,
सरि बिच सो निज सुरत विलासी. ३
भीतर तिलक ज्ञान कही गतियाँ,
सो नमुने शिर धरे जतमतीयां;
सूनो मम संत सजन ही समेतु,
तिलक ज्ञान अरथ कियो संकेतु. 4

कैवलवेत्ता स्तुति

कैवलवेत्ता पुरुष पराय,
अब स्तुति करूँ में ताय;
जयेति जयेति जुग तात तमो,
निरालंब निरलेपंग रमो. १
महा मंगळ मत परम उदारी,
अनंत इंड पर सुरत तमारी;
अखे अमरपद कैवल धाम,
तांहां वृत्ति पामी विसराम. २

एकमेक आंहांनां आंहां त्हांय,
सकल भेखना सतगुरु सांय;
पंचभूत सोता भगवंत,
लहे नहि कोई आद्य ने अंत. ३
श्रुति स्मृति शुं कहे कथी,
तोल तमारी बीजुं नथी;
तो उपमा शी दीजे तात,
माटे रही अबाजग वात. ४
तम सरखा तो एकज तमे,
विश्व बर्फ अमी तुम जमे;

जेने उर अनुभव होय सार,
ते पामे कोई गति तुमार. ५
कोमल वचन शीतल शशुदामी,
पाही पाही गुरु तुम परणामी;
जयेति जयेति गुरु परम निधानु,
मेटो मम त्रास पास अज्ञानुं. ६
सकल देव देवन के हो देवा,
परम कृपालु दयाल सभेवा;
तुम बिनु सहाय करन कोहु नाहि,
लोक चतुर्दश उतइत मांही. ७

निज मम स्वरूप पंच तनु पारी,
सोही दरशावो गुरु करुणा पसारी;
ओरु निज घर कर्ता तुम गावा,
ताही लखवावो जाही से हम आवा. ८
एही परकार करही जब स्तुति,
गुरुपद प्रेम धरही मजबूती;
रीझे गुरु जबही अगम गम दाता,
देई सर्व लक्ष करही सुख साता. ९

प्रांत:काल उपासना – मंगला आरती

मंगला आरती करत मोदीत मन,
उर अंतर आनंद भरी. टेक
तन की आरती तत्त्व पंचमुख,
इन्द्री एकादश बाती करी;
तूप प्रकृति भिंजाई बतियाँ,
ब्रह्म अग्नि से ज्योत जरी. मंगला...१
चितवन चंदन, चैतन अरचन,
अनुभव शंख लीयो समरी;

अधुधु शब्द अगम अगोचर,
सदगुरु कहत पोकार करी. मंगला...२
अग्रबति वैराग विशेषण,
प्रेम पुष्प धर्यो हार हरि;
ज्ञान घडियाली गिरा जन कारण,
लोक चतुर्दश खबर परी. मंगला...३
लक्ष निराजन निरखत निशदिन,
पति सनातन भाव भरी;
कहे कुवेर ऐसे हरिकुं,
तन मन सहित रहो समरी. मंगला...४

शणगार आरती

आरती महाराज राजकी,
मंगल मनोरथ भाव भरी;
अग्र सुगंध कपूर सोहावत,
बाति एकादश अज्ञ जरी. टेक

भाले तिलक के सरको ज्युं राजे,
चम्मर शिर पर छत्र ही धरी;
कौस्तुभ मणि उर अतंत शोभा,
निजानंद घनश्याम हरि. आरती...१
बाजित्रं बहु विध विध बाजे,
निगम वदे जश हेज करी;
शारद सुर समीप सब ठाडे,
अज भव श्रीपति सुरत धरी. आरती...२
संत सजन सब सन्मुख ठाडे,
अटकी सुरत कर जुगल जोरी;

किये उत्पन्न अंश आपयु जानी,
दृष्ट करुणा सब पर पसरी. आरती...३
दास नारण आरती कीजे,
रीझ पद रज अधिकारी;
सर्वातीत ईश पती सबके,
सोही प्रभु खेले जन संग हरी. आरती...५

कर्ता स्तुति

अहोनाथ नाहं जानामी जानामी,
मंदम् मम मतीयं तमो सद्गतियम्;
होहु आपकु सर्वम् पहेचानम् दिव्यानम,
तनु तत्त्वे तायम् रतियम् रतियम्. १
अहोनाथ नाथम् निरवाणम् निरालंब,
त्रिकालम् निहालम् विक्रालम् नयेति;
सस्वम् सर्व भूतानम् सप्राणम् सतंत्रम्,
वितरेणम् व्रतार्णम् कर्तारम् सखेति. २

अहोनाथ हो तुम विद्यानम् सिधंतंम्,
वित्तम् सत् निदानं समानम् धानामि;
श्रव्याणम् मंत्रेणम् कलेदं, व्यहं अंत्रेणम्,
चैतनम् करनारम् प्रणंतम् नमामि. ३
अहोनाथ स्वाधम् सर्वज्ञम् वादम्,
अनंतम् अघादम् बोधंतम् सनादु;
विश्वतम् विलासम् सोहंसम् अध्यासम्,
विलंतम् विनासम् सदातुम् अनादु. ४
अहोनाथ आरम् पुनिपद् पारम्,
नोधारम् ओधारम् अपारम् निरंतु;

तत्त्व स्वम् समासम् अखंडम् अनासम्,
समृतम्, सलोमम्, उत्पनतम् करंतु. ५
अहोनाथ क्षातम् नरपक्षम् अजातम्,
विविधं तम् विभाषम् एकोहं अद्यापि;
आरंधम् उरंधम् मध्यानम् महंतम्,
अथाहम् अथाहम् अथाहम् अमापि. ६
अहो नाथ स्वामी मनु तन धरामी,
अकामम् सकामी जीवम् परम अर्थम्;
भये भेख धारम् शशान्ति सकारम्,
हरंतम् विकारं हकारं समरथुं. ७

अहोनाथ आनी कैवलम् निशानी,
सोहु हम जानी आपोआप आपम्;
अतंतम् आक्रंतम् प्रकाशम् प्रवेणम्,
नरवेदम् विज्ञानम् वदे लक्ष व्यापम्. ८
अहो नाथ हो हम् शरनम् तुमारम्,
रखो नित्य नित्यम् सदायम् सधामी;
अगुनम् अनेकम् अहं त्वम् सहेकम्,
कृपालम् दयालम् कुवेरम् अकामी. ९
अहो जक्त नाथम् सर्वम् मात तातम्,
अनाथम् के नाथम् सहेजानंद सभावु;

अखिलम् समानम् दृष्टियम् धरंतम्,
करुणायम् कुवेरम् कधिनम् कभावुं. १०

साखी

भक्ति ज्ञान वैराग के, सकल शास्त्र फल टेर;
सहु संपत्ति सुख पाईए, भेटत श्रीमत् कुवेर. १
चिदानंद चकवे पति, गति करन मन स्वांत;
आयेहु जुग दरशाववा, घट घट कैवल क्रांत. २
रोम रोम रज रज गति, मति मनोहर ज्ञान;
दिव्य देश विविध विध, करी गये सकल पहेचान. ३

उचरे ग्रंथ अगाध ही, कलिमल हरन अज्ञान;
नाथ करनकुं दे गये, सज्जनकु पयपान. ४

जयविधि

आद्य सक्रत स्वराज करुणेश कैवल..

...सत् कैवल साहेब.

परिक्रमा १

चालो संत सजन प्रकंमा प्रभुनी करो जो;
श्रीमत् कुवेर चरण शीश प्रीते धरो जो. टेक
कदम एक कोटि यज्ञफल पामशो जो;
चोरासी लक्ष जनम केरुं दु:ख वामशो जो. चालो...१
चतुर आंटीघांटी खाण चतुरनी टळे जो;
पंचमी प्रकंमाए अचळ पदवी मळे जो. चालो...२
कनक दंडवत् नमी पाये जे परे जो;
सप्तगोत्र लई परमपद परवरे जो. चालो...३

चरण सेवा सुखनी शिर साधन सौ फळे जो;
ग्रही चिन्तामणि जेणे हाथ धारे ते मळे जो. चालो...४
बिनु चेन चरण चाहो मत कोईना जो;
प्रगट जक्त गुरु शरण ग्रहो ओयना जो. चालो...५
सुखना सागर दु:ख निकंदन करनार छे जो;
भये दरशन धन्य तेनो अवतार छे जो. चालो...६
खुद खावन खलक पावन करन आवीया जो;
अखंड ज्ञान चरण चेन जोने लावीया जो. चालो...७
अंकुश अमर कुलीश कमल जव्य शोभिता जो;
ध्वजा धेनुपद शंख चक्र ओपिता जो. चालो...८

स्वस्तिक जंबुफल कलश सुधा सार छे जो;
अर्धचन्द्र खट कुन मीन आकार छे जो. चालो...९
बिन्दु उरध रेखा अष्टकुण अंगमां जो;
इन्द्र धनुष त्रियेकुण धारी तनमां जो. चालो...१०
करुणा सिंधु कुवेर प्रगट जुगमां हरि जो;
अंग रंग अनंग छबी सुरत त्यां वरी जो. चालो...११
सोले कला समपुरण सर्वे साज छे जो;
नारणदास कहे एवा महाराज छे जो. चालो...१२

परिक्रमा २

कृपासिंधु श्रीमत् कुवेर मुजने मळ्या जो;
जनम मरण भय संशय सर्वे टळ्या जो. टेक
सुख सदन, मुख बेन येन संतनु जो;
करुणादृष्ट पायो मूल निज तंतनु जो. कृपा...१
सज्जन सहाय करन कायम कर्ता हरी जो;
अखिलानंद खीले खलक पे करुणा करी जो. कृपा...२
कामधेनु कल्पतरु चिन्तामणि जो;
चरण कमल सुख शिरता ते घणी जो. कृपा...३

निजानंद गुरु घनश्याम मूरती जो;
दीक्षा लेई अंश चरण प्रोई सुरति जो. कृपा...४
मीराल मग चरण चाल चतुरा हरि जो;
प्रगट देदार सुख मुख बेन सुरसरि जो. कृपा...५
नेत्र वदन चंद्र भृकुटि निज ओपती जो;
अनंत अनंग छबी सुरत जन रोपती जो. कृपा...६
सुधा सागर श्रीमत् कुवेर सुखदे भर्या जो;
दास नारण बिन्दु एक चरणमां वर्या जो. कृपा...७

परिक्रमा ३

अल्या पूर्वेनी प्रीत जेने हशे जो;
चरण श्रीमत् कुवेर ने ते वसे जो. टेक...
छाया हुमाहुनी जे जन पर जशे जो;
क्षितिराज सुखसाज तेने थशे जो. अल्या...१
अनल इंड छोडी रही गगने वसे जो;
सुलजे इंड बाल मात भेळां थशे जो. अल्या...2
कुंजी दूर इंड छोडी चारे धसे जो;
अपत्य आश बाल माता भेगां थशे जो. अल्या...३

सुक्ति शरदऋतु प्रीत बुंदनी हशे जो;
निपजे मुक्त महाठाम ते पामशे जो. अल्या...४
पतंग प्रित दीप साथे जईने फसे जो;
तजे प्राण क्षणु एक दूर नव खसे जो. अल्या...५
चकोर चंद्र प्रीत लग्न अगन पर धसे जो;
भखत जीवत अंगार दग्ध करी नव शके जो. अल्या...६
निजानंद फरक फंद गरक ज्ञान से जो;
करुणासिंधु कुवेर मिले, भक्ति प्रेम से जो. अल्या...७
नारणदास चरण आश चित्त में वसे जो;
हृदय कमलमांथी प्रमु दूर नव खसे जो. अल्या...८

परिक्रमा ४

संत सज्जन सुणो सिपाई सत्‌गुरु तणा जो;
शस्त्र सज्ज करी आप्यो तो तेमां नहि मणा जो. टेक...
हमील आद्य हंमेश डारी माळा कोट में जो;
फरु निरभे डरु नहि काळ चोट में जो. संत...१
खमैया खांडुं धीरज ढाल जमैयो जतमते जो;
काम दहन कटार कस्यो निज सत्‌वते जो. संत...२
बुद्धि बंदुक मनको बारुत गोळी चित्त चळे जो;
अहंकार अगनपलीतो प्रेम नेम सर्वे पळे जो. संत...३

शब्द धनुष सुरत सरगम भाथो भर्यो जो;
ज्ञान बळे भक्ति कळे त्याग दियो परो जो. संत...४
धरम बख्तर ढांकण शरीर केरुं कर्युं जो;
अनित दोष करम देह थकी रहे परुं जो. संत...५
भाव भलक नेकना नेजा तहां फरफरे जो;
दुष्ट दुर्बुद्धि दल देखी ने तहां थरथरे जो. संत...६
अश्व उमंग लहे लगाम छोगां छमछमे जो;
भोवन चतुर्दश की पार कदम धमधमे जो. संत...७
सहेज पलाण समझ-चाबुक करमें ग्रह्यो जो;
उमंग अश्व चलाववानो भेद सर्व लह्यो जो. संत...८

ए सब साज सजके सान्निध्य गुरुने गयो जो;
ऊभो कुनस्त करी, पटो दया धरीने दीयो जो. संत...९
श्री सरकार श्रीमत् कुवेर महाराज छे जो;
नारणदास खाना जातना धिराज छे जो. संत...१०

गुरु स्तुति

प्रथम वंदु गुरु सत्स्वामी,
सकल गुण गति सागरम्;
ता चरण रज लेई धरु शिरपर,
द्यो गति अगम उजागरम्. १
त्याग भक्ति पुनि प्रेम ज्ञान निज,
अखण्ड अनुभव दीजिए;
करी करुणा प्रभु दीन जाणी,
जन आपनो कर लीजिए. २

जयेति जयेति जुग तात स्वामी,
अंतरयामी आप हो;
उपाये अंशकु दक्ष देवा,
ज्ञानमेवा लाये हो. ३
अमृतफल निज मोक्ष लाये,
पाये संत सजन भये छकीतम;
दुष्ट जीव दुरमति के घेर,
न पाये भये दुखितम्. ४
उभये जनकु सुख साहेक,
सुणो संत सचेतनम्;

ज्ञानहिन जग भिन्न जडवत्,
स्थावर सम मनु वेतनम्. ५
उमंग नहीं नभ घन न गरजत,
बरसत नहीं बिनुं प्रोजनम्;
सिंचत बाग जब शिर नियंता,
काज अकाज सब प्रोक्षनम्. ६
उपज समी फल बीज वाडी,
बिनु फल वृक्ष अखंडनम्;
लाभ लिंन भिंन वृत्ति नायक,
सिंचत नहि तरु वृंदनम्. ७

विश्व बाग कर्ता वृत्ति प्रेरक,
सिंचत घनसुख दायकम्;
ज्ञान जदीप जगत्ये सब जावे,
मनु श्रेष्ठ न सरायकम्. ८
स्थावर जंगम समसृष्टि,
पुष्टि करन प्रीछयुं ते नहीं;
बिनुं पुष्टि परले सब जावे,
फेरी रचतां प्रेहतन सही. ९
निजपति इत हेर आज्ञा देई,
आप अंश पठावनम्;

बिनुं निज ज्ञान जगत जन परले,
सरल गेल नहि पावनम्. १०
दयावंत अनंत गति जीनुं,
गवन संत संग शोभितम्;
गगन उडगन चंद्र शोभे,
अनंग छबी सुरत जन लोभितम्. ११
कळा खटदश निध्य पुरण,
सिद्धि अष्ट चरणे वसे;
देव चतुर्दश, सेवा कारण,
लाये आप सुरधाम से. १२

अधर तखत पर अरस आसन,
दरशत ही दिव्य नेतरम्;
लक्षातीत् पक्षते वरजित,
सोई सत्गुरु ततपरम्. १३
अवन्य अंकुर बीज जेता,
सदा सम विनुं जल रहे;
अरस नीर जब परस पाये,
उदे अंकुर सन्मुख रहे. १४
सघन घन नीर शुद्ध करुणा,
श्रीमत् कुवेर की जब थई;

अंश अंकुर उदये अचल मति,
निजपति सन्मुख दृष्ट भई. १५
तेज पुंज तनु विशेष विभूति,
शक्ति ज्योत नहि पावनम्;
अज उमीयापति श्रीपति शारद,
शेष सहस्त्र मुखे गावनम्. १६
संत सहाय करन निज कर्ता,
भक्त वत्सल नर तनु धरे;
श्रीमत् कुवेर सब सुख के दाता,
दास हेतु डोलंत फिरे. १७

फिरत भव भीर भंजन प्रभु,
करन काज सब जीवनम्;
असंख्य जीव धणी धाम पठावत,
बंदी छोड व्रद वंदनम्. १८
तिलक भाल विशाल लोचनम्,
अधुर अनोपम शोभितम्;
निजानंद घनश्याम मूरत,
संतजन के मन लोभितम्. १९
पाण्य जोडी शिर नाई सेवक,
दास नारण करे विनंति;

मांगु प्रेम भक्ति, चरण सेवा,
यश गावा अनुभव गति. २०

जयविधि

आद्य सक्रत स्वराज करुणेश कैवल..

...सत् कैवल साहेब.

गुरु महिमा

प्रथम परमगुरुने नमु, दीये कर्ता संबंधी ज्ञान;
आपनपु पति जाण के, तजे जक्त अभिमान. १
जगबंधन अति जनकु, तन मन कीये बेहाल;
महा विकट कळिकाळमां, प्रगटे दीन दयाल. २
अनंत ब्रह्मांड की विभुवित, प्रगट चिन संयुक्त;
धन्य परमगुरु पोमी पर, अंश करनकु मुक्त. ३

राग–मोतीदाम छंद

पतिपद परमगुरु एकमेक,
समजे जे संत ए मोटो विवेक. ४
अकळ कळा न कळे कोई जंत,
एवी गति परमगुरुनी अनंत. ५
अनंत ब्रह्मांडाधीश कहावे,
तेनो लक्ष परमगुरु यहां लावे. ६
सर्वातीत सर्वेश्वर स्वामी,
तेनो लक्ष देवाने कोक ज दामी. ७

निगम नयेति कहे निरधार,
सामान्य जीव न जाणे संसार. ८
रच्यो जेणे जक्त सकल पसार,
जोये जम तम देत तहां आहार. ९
एवा सुखदायक लायक स्वामी,
तेने न भजावे भरी कोई हामी. १०
हिंमत विना जो हामी भरी जे,
शरणे आवे तेने ते शुं पद दीजे. ११
एवा गुरु ठग ठगे सहुलोक,
पतिपद साचु लह्या विना फोक. १२

पतिपद परमगुरु एक जाणे,
भवेला पदारथ सहु वखाणे. १३
भवेलाने जे कोई कहे भगवंत,
एवा गुरु बादल संत अनंत. १४
परमगुरु निजपतिना वेत्ता,
भूलाया जीव कीया ते सचेता. १५
पतिपद दर्शावे दिव्य नेंन,
देखाड़े सर्व अंशोनुं येंन. १६
करे अंश पोताने घेर निवास,
एवो गुरु ज्ञान गतिनो प्रकाश. १७

एवा गतियारा गुरु ने जे पूजे,
तेना घटमांही गति बहु सूझे. १८
अनुभवानंद आनंदनो कंद,
संशे गर्भ संकट टाले फंद. १९
गुरु हुमाहु छाया कृपा पसारे,
कर्ता शरणे सुख दे दुःख निवारे. २०
एवा गुरु जाणी कर्यो विसवास,
मोटा मुनि चरण करे छे निवास. २१
अज भव श्रीपति सुर समेत,
लहे सुख सनकादिक थई वेत. २२

शंकर दत्त कपिल ही व्यास,
महिमा करे नारद गुरु प्रकाश. २३
शारद शेष वखाणे वेद,
गुरु वचनारथनो अतिभेद. २४
माने जग ईश दशु अवतार,
रहे निज गुरु तणे आधार. २५
पाम्या ईशता गुरु कृपा जो पाई,
बिन कृपा जग जीव सराई. २६
गुरु साम्रथ सबे सुख दाता,
आवे शरणे तेने करे गति माता. २७

पीवे रस पूरण अंश छकेतु,
रहे हजुरी अंश थई बड वेतु. २८
पोखे वित्त परमगुरु हेत आणी,
मिलावे पतिपद दे निरवाणी. २९
गुरुपद प्रौढ़ प्रचंड प्रत्यक्ष,
पामे निज कैवल मोक्ष के दक्ष. ३०
गति चकवे अनुभव अनादु,
लघु जीव को जाणे वाद विवादु. ३१
गुरुपद मोटुं अमोघ अमूल्य,
आवे नहीं कोई गुरु समतुल्य. ३२

वैष्णव कोटि अनंत अनेक,
तेने शिर शोभे गुरुपद एक. ३३
गुरु गुरु ज्यां त्यां सौ कोई कहे छे,
चार प्रकारे गुरुपद रहे छे. ३४
प्रोक्ष गुरुपद प्रोक्ष बतावे,
पदारथमां जीवकु विलमावे. ३५
गुरुपद देव बतावे प्रत्यक्ष,
दर्शावी देहमां आपे तेही दक्ष. ३६
सतगुरु सत् बतावे जे अंश,
नर्णे करी जुए कर्ता को वंश. ३७

तेही अंश आपनपु तब जाणे,
जबी सतगुरु तेही परमाणे. ३८
जेनो अंश त्यांही मेलाप करावे,
अंशी पद मां एकता करवावे. ३९
अंशी पद कैवल एक समेवा,
आये तेनो लक्ष परमगुरु देवा. ४०
परमगुरु परमपति के प्यारा,
मिले गर्भ संकटथी करे न्यारा. ४१
एवा गुरु आनंद महा सुखकारी,
पर उपकार करन देहधारी. ४२

दिव्य रूप सुंदीर शोभा रसाळ,
घनश्याम मूरत महा विशाळ. ४३
पद पंकज अलि अंश शोभे,
लेतां मुकरंद मनोज ही थोभे. ४४
असंख्य अंश करे ज्यां निवास,
शरणे आवे जे तेनो थाय समास. ४५
फरी गर्म संकट ते नव पामे,
साचे दले आवे महादुःख वामे. ४६
एवो पद पंकजनो परताप,
मिले पति पद लहे निज आप. ४७

एवा सुखमां जन झीले अपारु,
अहो धन्य जन जे पामे देदारु. ४८
एवा जन भायगवान भवेतु,
भये भवमां जेही भक्ति के खेतु. ४९
गुरु घन ज्ञान सिंचे जल धारा,
पाके प्रभुता विधि गति अपारा. ५०
तेही प्रभुता पद प्रौढ़ ते पदमी,
कर्ताकार थई लहे सुख कदमी. ५१
तेही सुखना जे दाता गुरु पोते,
टळे जे असुझ गुरु मुख जोते. ५२

अरुण उदे अंधकु नव सुझे,
बिनुं अंश भक्ति पति नव बुझे. ५३
भजावे गुरु ते पतिपद वाचे,
लेवा तेही लक्ष रह्यो मन साचे. ५४
साचो संबंध सदा सुखकारी,
तन मन धन गुरु पर वारी. ५५
मिथ्या पद देता महापद पावे,
थई शरणे रहे भक्ति के दावे. ५६
गुरु तुम विना नहिं कोई मारुं,
लाग्युं काळ मायातणु बहु लारुं. ५७

तेथी दुःख पा यो अघाद अपारु,
कोण करे सहाय नहि कोई मारु. ५८
काम क्रोध लोभ महा बडभूप,
इन्द्रि गुण अंतस शत्रु जनुप. ५९
एही सब शत्रु वेधे तन मारु,
करे छे बेहाल नहि सुख सारु. ६०
त्राहे त्राहे पोकारु छुं पतिकु,
सुणो धणी अरज ए दुःख सतिकु. ६१
होय पतिव्रता तो पतिने लाज,
विटंडी ने सुख न मळे समाज. ६२

एवा गुरुचरण तणो जे उपासी,
सुखे पद पामे कर्ता अविनाशी. ६३
गुरु ते कर्तामां नहि भिन्न भाव,
निश्चे निज जन तणो एही दाव. ६४
प्रीते पीवे पाव गुरुना पखाळी,
तेनुं हृदय शुद्ध थाय अजवाळी. ६५
तीरथ अनेक तणुं फळ आवे,
प्रसादी प्रीते करीने जे पावे. ६६
पूजे प्रीत करी गुरुजीना पाय,
चतुर्दश देव पूजा फल थाय. ६७

गुरु सेवा मानसी शुद्ध करी जे,
विधि संयुक्त ही ध्यान धरी जे. ६८
जेनो शुद्ध गुरु विषे छे भाव,
तेने शिर जम तणो नहि दाव. ६९
यथा युक्त सूझे करे गुरुसेवा,
कर्ता शरणे जई लहे सुख मेवा. ७०
भजन करे गुरुनुं चित्त लाई,
ईच्छा मनवंछित ते फल पाई. ७१
वचन गुरु को कबु नव लोपे,
तेनो महिमा जगमां बहु ओपे. ७२

विरोधी वचन बोले गुरु आगे,
अनाहुत पाप आवी सब पागे. ७३
लोपे मुरजाद गुरुनी जे शिष्य,
तेने शिर स्वामी नहि अन ईश. ७४
एने कोई दु:ख दे महाभारी,
छोड़ावे तेने कोण दया दल धारी. ७५
करे गुरु निंदा सुणे देई कान,
नीच पदवी पाय दे न कोई मान. ७६
गुरु संगथी विछड़े जन जेह,
गये धराबोळ आवे नहि छेह. ७७

फरे नघरो भूकंपे क्रप धारी,
लगे भार शेष सहे न अपारी. ७८
तेनुं मुख दीठे लगे बहु दोष,
हरि गुरु संत करे तिनु रोष. ७९
महा क्रप करी देवे जम त्रास,
छोडावे तेने कोण थाय निराश. ८०
तेनी सांख्य संमत जुओ पुराणे,
पुछो सत् शास्त्र निगम नराणे. ८१
वदे वसुधामां भये जन जेता,
गुरु विना मोक्ष नहि कहे वेत्ता. ८२

तन मन धन जे शिष समरपे,
पोता तरफ राखे न सौ सुख अरपे. ८३
एवो अधिकार धरे जन जेही,
पामे पद कैवल मोक्ष सदेही. ८४
एवा प्रतापी जे गुरु गतिवंता,
तेने तजी जीव लहे नहि अंता. ८५
पा यो मनुषा देह मोंघो महा अमूल्य,
कुण कुमत्य आवी तुझ भूल्य. ८६
फरी दाव आवो कबु नहि आवे,
चूके गुरुथी जमपुर ही जावे. ८७

जई जमपुर करे त्यां वास,
सहे महा संकट गर्भ निवास. ८८
कहूँ केटली तुज मूरख प्राणी,
जाने शरणे गुरु सु हेत आणी. ८९
तन मन धन समरपी ने रहेवुं,
गुरु कसोटी दे ते सर्व सहेवुं,९०
सही कसोटी सुख पाम्या अपारु,
अहो जन धन्य एवा अधिकारु,९१
तेनो यश ज्यां त्यां सौ कोई गाशे,
जेने हृदये गुरु करे जो प्रकाशे. ९२

गुरु सेवामां चूके चूक पड़ावे,
तेने ठोर ठेकाणे कोण ठरावे. १३
भमे भवमां भमतो भुर भावे,
सुखे नहि पामे खपे काळ दावे. १४
जेने माथे काळ तणो भय भारी,
तेने गुरुभक्ति लगे नहि प्यारी. १५
एने गुरु केम करे प्रतिपाळ,
दयाळु घणा पण दे मुख काळ. १६
गुरु पासे बेसे नहि स्थिर थाई,
वृत्ति विलमे ज्यां अनाहुत पाई. १७

अनरथ अर्थ कमायो कुटिल,
खोयो मनुष्या देह मोंघो महा सुशील. ९८
साकुटकु केटली कहु शिक्षा,
गयो अधोगत बिन गुरु दीक्षा. ९९
तदपि गुरु महा पर्म दयाळु,
लेइ शरणे सुख देवे रसाळु. १००
एवा दयाळु गुरुना गुण गातां,
रही जग मां लहे जे सुख माता. १०१
रिद्धि सिद्धि सुख संपत न मागुं,
इच्छा पदरज चरण चित्त लागुं. १०२

मागुं शुभ सेवा भक्ति पद साचुं,
एवो अधिकार आवे एवुं जाचुं. १०३
दीनबंधु बंदी छोड़ कहावो,
मोइ गरीब लगे तब दावो. १०४
एवा गुरु जाणी आव्यो छुं शरण,
मीटो महादुःख जन्म ने मरण. १०५
मोई शिर शत्रु अनेक भड़े हे,
वेधे तन जे काम बाण गडे हे. १०६
तेमां चेन केम पडे दुःख भारी,
स्वामी शरणे ल्यो ग्रही बांय मारी. १०७

तुम साम्रथ हरो दुःख मारुं,
दाता दीनबंधु ए ब्रद तमारुं. १०८
छाया कल्पवृक्ष में जे नर आवे,
इच्छा मनवांछित ते फल पावे. १०९
पारस पर्स रहे लोह जाति,
कहे कोण पारस नाम विजाति. ११०
दोही कामदुर्गा भुख नव भागी,
लजे नाम काम करे पद पागी. १११
चिन्तामणि ग्रही इच्छा फळ आपे,
रहे न दारिद्र दुःख सर्वे कापे. ११२

एथी अधिक परमगुरु आपे,
मल्या जेने तेने न दुःख अद्यापे. ११३
पामे दुःख दास बट्टो बहु बेसे,
ग्रही बांय ब्रद पाळो गुरु येसे. ११४
जोशो अपराध मारा मन धारी,
छुटु न कबु कर्मदोष अपारी. ११५
खूनी खून का गुना देतां न पार,
करो बक्षिस गुरु शरण तुमार. ११६
लजे शरणो जो उगारो न मोई,
अपत्य अनिन दास गुरु तोई. ११७

करु शुं स्तुति मुंगो मुख वाचे,
आई गुरु शरण पड्यो दल साचे. ११८
देखु न तुम सम ओर न कोई,
नाव वायस वृत्ति मम जोई. ११९
ठोर ठरन अवर न आश,
जावु ज्यां त्यां बंधन के पास. १२०
पास छोड़ावो साम्रथ स्वामी,
श्रीमत् कुवेर गुरुकु नमामि. १२१
नमामि जगतगुरु जग ईश,
लहे महिमा तेना गुरु धीश. १२२

श्रीमत् कुवेर गुरु चक्रवर्ती,
ज्ञान अमल जुवे कोई नर्ति. १२३
अमल मोटो जे पामे अधिकारी,
तेनी प्रभुता सबकु लगे प्यारी. १२४
गुरु शिरछत्र बिराजे जेने,
दमे केम काल माया जग तेने. १२५
पीडे न पित्रु यक्ष दानव देव,
साचो परमगुरु साथे अहंमेव. १२६
राजा रंक भूत पिशाच समेत,
नव ग्रह आद्य पनोति सहेत. १२७

गुरु रिझमां सुख संपत सर्व,
विमुखी विरोधी पामे टळे गर्व. १२९
जेनुं मदसुदन नाम कहावे,
चढ्यो मद एकु न गुरु रहावे. १३०
गुरु साम्रथ श्रीमत् कुवेर,
नारणदास लह्यो ए नवेर. १३०
जोयुं नर्णे करी आ जुग मांही,
गुरु बिना सत् पदारथ नांही. १३१
एवुं सत्य जाणे माणे सुख मातु,
गमे न तेने विषयानंद नातु. १३२

साचो संबंध गुरु शुद्ध जोडे,
करे जग आड्य तेनुं मन मोडे. १३३
एवो शूरवीर डगे केम देखी,
श्रीमत् कुवेर शरण लियो पेखी. १३४
डरे केम केसरी बाल कराल,
भगे जूथ कुंजर महा विकराळ. १३५
पोखे परताप गुरु जेही वित्त,
रहे नघरो जगमां निरवीत्त. १३६
धरे शणगार कन्या जे कुंवारी,
शोभा सुख नहि बिनु भरथारी. १३७

किया उदे अंश पति तेही जाणो,
मिले तेही लक्ष गुरु परमाणों. १३८
गुरु ते कर्तामां नहि फेरफारी,
श्रीमत् कुवेर की ज्यौ बलिहारी. १३९
नारणदास चरण चित्त लागु,
ईच्छा पदरज भक्ति पद मागुं. १४०

साखी

महेर करी मोई दीजिये, सेवा समरण ध्यान;
यश गावा अनुभव गति, करु पति परम अविलान. १४१
परमगुरु के शरण की, महिमा अपरंपार;

शारद शेष न कही शके, केशो रहे ईतबार. १४२
वारपार जाको नहि, गुण गति दधि समतोल;
चिडिया चंच भरी रही, सागर सम तुम छोल. १४३
दधि सम तुम गुरु गति, मम मति अल्प अजाण;
महा पतितकु पावन करो, श्री गुरु परम सजाण. १४४
सजाण शरण आवी पड्यो, नारणदास अति दीन;
प्रौढ परमगुरु जाण के, ग्रही शरण रह्यो लोलीन. १४५
अखिलानंद सुख शरण के, माणे तेही संत सजन;
नारणदास शरणांगत, रह्यो दृढ देई तन मन. १४६
गुरुमहिमा मुखसे पढ़े, प्रातः समे करे पाठ;

अनंत जनम अघ संशयकु, सबको घाले घाट. १४७
मनन करे मध्यान से, अर्थ विचारे जेह;
तिनकु कैवल मोक्ष को, यामे नहि संदेह. १४८
संध्या समये एही पाठ को, सुणे सुणावे जे अर्थ;
उपासी होय गुरुतणो, पामे अनुभव ग्रथ. १४९
अष्ट सिद्धि नव निधि सबे, सुखसंपत्त सब साज;
गुरु उपासन में सबे, पामे अनुभव राज. १५०
तेही दाता गुरु परम ही, श्रीमत् कुवेर सत्नाम;
नारणदास निरभये भयो, करी चरण विश्राम. १५१

सायंकाल उपासना विधि — गुरु महिमा साखी

महेर करी मोई दीजिये, सेवा समरण ध्यान;
यश गावा अनुभव गति, करु पति परम अविलान. १
परमगुरु के शरण की, महिमा अपरंपार;
शारद शेष न कही शके, केशो रहे ईतबार. २
वारपार जाको नहि, गुण गति दधि समतोल;
चिडिया चंच भरी रही, सागर सम तुम छोल. ३
दधि सम तुम गुरु गति, मम मति अल्प अजाण;
महा पतितकु पावन करो, श्री गुरु परम सजाण. ४

सजाण शरण आवी पड्यो, नारणदास अति दीन;
प्रौढ परमगुरु जाण के, ग्रही शरण रह्यो लोलीन. ५
अखिलानंद सुख शरण के, माणे तेही संत सजन;
नारणदास शरणांगत, रह्यो दृढ देई तन मन. ६
गुरुमहिमा मुखसे पढ़े, प्रातः समे करे पाठ;
अनंत जनम अघ संशयकु, सबको घाले घाट. ७
मनन करे मध्यान से, अर्थ विचारे जेह;
तिनकु कैवल मोक्ष को, यामे नहि संदेह. ८
संध्या समये एही पाठ को, सुणे सुणावे जे अर्थ;
उपासी होय गुरुतणो, पामे अनुभव ग्रथ. ९

अष्ट सिद्धि नव निधि सबे, सुखसंपत्त सब साज;
गुरु उपासन में सबे, पामे अनुभव राज. १०
तेही दाता गुरु परम ही, श्रीमत् कुवेर सत्नाम;
नारणदास निरभये भयो, करी चरण विश्राम. ११

जयविधि

आद्य सक्रत स्वराज करुणेश कैवल..

...सत् कैवल साहेब.

गोड़ी पद १

में अविनाशी उपासी हो संतो,
में अविनाशी उपासी;
गति अगम अगाध लखासी हो संतो,
में अविनाशी उपासी. टेक...
जप तप तीरथ व्रत वेदोगत,
साधन सिद्ध अध्यासी;
सुरत नुरत धरी लगन लगावे,
तो तीन लोक पद पासी. हो सन्तो...१

दश अवतार धरे धरणी पर,
द्वे मांही अमल जमासी;
नाम रहे रुप रहेन न पावे,
अंतकाल गये नाशी. हो सन्तो...२
पृथ्वी तेज पवन नभ पाणी,
अति परलंत विलासी;
चउदेई लोक हे उनकी भितर,
उनकी हे जुठी आशी. हो सन्तो...३
हाड मांस रग लोह न चरम,
येसी है देह हमासी;

सोहंग साहेब नाम हमेरा,
निज कैवल पद वासी. हे सन्तो...४
ब्रह्मा विष्णु माहेश्वर देवा,
जेणे आ सृष्टि प्रकाशी;
महंमाया का एक दिवस में,
अनेक बेर मर जासी. हो सन्तो...५
विते कलप रहे शक्ति तन,
ज्योत में जाई मेलासी;
येसे कलप रहे सत् ज्योति,
ब्रह्म में जाई भेलासी. हो सन्तो...६

ब्रह्म चिदानंद आनंद सिंधु,
जिनु कैवल परकाशी;
उठत ईच्छ सृष्टि सब फोरत,
समतां सकल समासी. हो सन्तो...७
आदौ अंश वंश हम जाके,
अवधकाल नहि खासी;
निज घेर सुरत जाई मम लागी,
आन्य देव ते उदासी. हो सन्तो...८
हे कैवल सदोदित पुरण,
निरालंब निरासी;

कायम सोई कुवेर कहे मम,
आद्य पुरुष अविनाशी. हो सन्तो...९

गोड़ी पद २

वा घर काहु न जाण्या हो सन्तो,
वा घर काहु न जाण्या;
नेति निगम पोकार कह्याना हो संतो,
वा घर काहु न जाण्या. टेक
वेद कतेब कुरान पुराना,
तामे आ जक्त भुलाना;

जन्म–मरण धोखे धर खाया,
आत्मा नहि पहेचाना. हो सन्तो. १
सांख्य वेदांत मिमांसा पातांजलि,
न्याय विशेषी लह्याना;
ए खट दरशन के निज हारद,
गुण गोलक का ज्ञाना. हो सन्तो...२
लोक चतुर्दश विश्व चराचर,
तिनु आ देव ठराना;
राजस सात्विक रुद्र तमोगुण,
जोगी जोत्यका ध्याना. हो सन्तो...३

ईन्द्रि एकादश वश करी राखे,
वंदे सकल जहाना;
कीरती कीच कली मत भाखे,
नाखे जीवकु फाना. हो सन्तो...४
हे हम जीव करे नित्य करीया,
पोथी पाठ पढाना;
रसनाये रटण करे रत्य लाई,
मोक्ष मुगत मन मान्या. हो सन्तो...५
भेख अनेक रचे विविध विध,
पंथ वहेवार विभाना;

संसार फंद तजी लोह फांसी,
कंचन पास बंधाना. हो सन्तो...६
जे जिनके मत की गत्य ठानत,
शिर साहेब का बाना;
मेरी तेरी छूटत नांही,
निज पति परम अयाना. हो सन्तो...७
धर्म अर्थ काम ने मोक्ष पदारथ,
शास्त्र सकल बखाना;
सायुज सालोक मुक्ति सामिप्य जे,
स्वानिध्य द्वैत डहेकाना. हो सन्तो...८

ब्रह्मवेत्ता जुग में जन जेता,
जिनुं व्यापक वित्त ठाना;
कहे कुवेर पेर वित् कारन,
सो पति परम अयाना. हो सन्तो...१

गोड़ी पद ३

अद्‌भुत ज्ञान हमारा हो सन्तो,
अद्‌भुत ज्ञान हमारा;
कोई जाणे जाणनहारा हो सन्तो,
अद्‌भुत ज्ञान हमारा. टेक

देवल देव पूजाविधि पाती,
षोडस कर्म आचारा;
धूप दीप सजी अरघ आरती,
ए सहु ओरल्या वहेवारा. हो सन्तो...१
आसन मार पवन पुनि साधे,
बंधे दश दरबारा;
वंकनाळ चढी ज्योत जगावे,
तोहु न बंचे कारा. हो सन्तो...२
श्रवण कीरतन पूजा आदि,
भक्ति नव परकारा;

दशधा प्रेमलक्षणा जो पावे,
तो गौलोकनाथ देदारा. हो सन्तो...३
त्रिपद देव नहि चिद् शक्ति,
नहि पंचभूत आकारा;
त्यां गौलोक ने वैंकुठ नांही,
अविगत अरस सांईयारा. हो सन्तो...४
ईंगला पिंगला सूक्ष्मणा नाडी,
ब्रह्मरुद्र झनकारा;
योगी योग सकल विधि साधन,
यहां लगी अमल तमारा. हो सन्तो...५

गुप्त चले धरणी गगन्ये गम,
लेख करे नभ तारा;
चौद लोक के मन की जाणे,
प्रकृति लिया अवतारा. हो सन्तो...६
जागृत स्वप्न सषोपति तुरीया,
मन बुद्ध चित्त अहंकारा;
ए अष्ट आव्रण रहित अगम घर,
अपरंपार अपारा. हो सन्तो...७
भक्ति करे जुगमें दृढता धर,
तन मन सहित सकारा;

परचा आन्य पुरावे परस्पर,
गुण के साधन वारा. हो सन्तो...८
समलित ब्रह्म चराचर व्यापक,
घटघट हंग हकारा;
ओहंग सोहंग दोनुं रहित दुग्धा,
निज परमपद न्यारा. हो सन्तो...९
पिंड ब्रह्माण्ड फोडी मम सुरता,
गज्ञ तज्ञ भई पारा;
कहे कुवेर कैवल परस्पर,
भई गति अगम अपारा. हो सन्तो...१०

गोड़ी पद ४

देश हमारा वंका हो सन्तो,
देश हमारा वंका;
ज्यां नही काळ जाळ की शंका,
हो सन्तो देश हमारा वंका. टेक...
चलना चहाव कोहु मम मारग,
छोड़ो आ तन की अहंका;
काटी शीश धरो धरणी पर,
कुण राय कुण रंका. हो सन्तो...१

गति विना गवन पाव विना पंथा,
रवि विना तेज असंका;
रुप विना मुरत सुरत विना निरखन,
तार विना रवाज ररंका. हो सन्तो...२
घन विना नीर गगन विना गर्जना,
धरा विना विश्व धरंका;
धड विना सिर पीर विना परचा,
पति विना पाये परंका. हो सन्तो...३
गुण विना ज्ञान ध्यान विना धारन,
धे विना धरत ध्यानंका;

धाता विना धवन गवन विना गुणीजन,
ऋतु विना राग अलंका. हो सन्तो...४
पूंज विना देव सेव विना सन्मान,
रिद्धि विना भोग धरंका;
अन्त:करण चारु विना चितवन,
लखी न शकत बावन अंका. हो सन्तो...५
कोटि अनंत भये जन आगे,
धरी मन अगम आशंका;
अगम की चलक भलक भवतारन,
परचा सोई पद परमका. हो सन्तो...६

ओरल्या अगम रहत पद निगम,
अव्याकृत घर ए मायमका;
परचा होत सबे उनहीते,
यामे सकल डेहंका. हो सन्तो...७
ज्यां नहि शक्त जक्त नहि उत्पन्न,
नहि गति ज्योत तेजम का;
कर्ता ईश अनंत सुपनवत्,
ता सरभर नहि रेखन का. हो सन्तो...९
ब्रह्म सनातन कहत सबे मिलि,
ताकी कहु में उपमका;

अनंत कोटि कृष्ण केल करत ज्यांहां,
तेता राम रहंका. हे सन्तो...१०
येसे असंख्य धाम पर कैवल,
जाणे न कोई जानंका;
राम कृष्ण लव ध्यान धरत वाको,
छूटत करत कलंका. हो सन्तो...११
अगणित पाण्य पादु श्रवण नेंन,
संख्या रहित बरनन का;
कहे कुवेर सोही पति मेरा,
जुग जाहेर जश डंका. हो सन्तो...१२

गोड़ी पद ५

प्रगट मनुज अवतारा,
कैवलकुल प्रगट मनुज अवतारा;
कोई जाणे जाणनहारा,
कैवलकुल प्रगट मनुज अवतारा. टेक
नयेति निगम तीत शास्त्र वचन से,
अनुभव अगम अपारा;
न भवतु भवित लहित गति जाके,
सो पति खुद किरतारा. कैवल...१

अष्टादश चिन अंग शोभित जीनुं,
नौतम छबी शुभ सारा;
ललीत लक्ष घनश्याम स्वरुप के,
दर्शन ते भवपारा. कैवल...२
भूक्षण विविध विध पट शोभित,
सोव्रण सकल शणगारा;
मंगल मुरत मनोज लजावन,
सो प्रभु प्रगट देदारा. कैवल...३
सुंदिर सिंघासन आप बिराजे,
छत्र सो शिर पर धारा;

दाह वाम दोउ चम्मर ढलत हे,
छड़ीदार दोउ ठारा. कैवल...४
विधि पूर्वक पूजा सब सजके,
बाजंत्र बजे झनकारा;
झगमग ज्योत जरत दोउ दीपक,
ज्ञान करत गतियारा. कैवल...५
संत सजन आरति सज ठाडे,
जोडी कर सुरत सकारा;
निरखी रुप रस लीन सुरत छबी,
हो गये चित्र आकारा. कैवल...६

पुष्पांजलि स्तुति विनये विधि,
करे जन हरख अपारा;
अहो निज आप तात सबन के,
सुख निधि शरण तुमारा. कैवल...७
करुणासागर नाम प्रमाणिक,
करुणा दृष्टि पसारा;
करुणा मोक्ष कैवल पति पावे,
अंश अनंत भव पारा. कैवल...८
श्रीमत् कुवेर धन्य प्रगट पोमी पर,
कदम कीये अग जारा;

नारणदास आश पद रज की,
शरणांगत सरकारा. कैवल...९

गोड़ी पद ६

अलख खोजो घटमांही हो संतो,
अलख खोजो घटमांही;
ताते जनम मरण भय नांहि,
हो सन्तो अलख...टेक
अलख ही आप लखीत तन सारु,
वारु आ विश्व विलाई;

विलंता वित्त रहे जेही वस्तु,
उदे न अस्त सोहाई. हो सन्तो...१
वितपन वेष जे वस्तु वेषातीत,
ते लक्ष दे गुरु सांई;
माटे गुरु शिर साम्रथ थापो,
दे निजपद ओळखाई. हो सन्तो...२
बीन गुरु अलख लहे नहि जुगधर,
जे लहे ते विलजाई;
आग्ये शाख अनंत हे उनकी,
जब दे गुरु बकसाई. हो सन्तो...३

गुरु पदवी सबके शिर साम्रथ,
जाहेर जुगकी मांही;
दश अवतार चाहे गुरुचरणा,
रहे निजपद सरसाई. हे सन्तो.... ४
गुरु कर्ता द्वे नांहि निज एकु,
अजब कळा कळ पाई;
श्रीमत् कुवेर के चरण कमल पर,
दास नारण बल जाई. हो सन्तो... ५

गोड़ी पद ७

सेवो गुरुपद सोई, हो सन्तो सेवो गुरुपद सोई;
जामे आवागमन नव होई, हो सन्तो...टेक
गुरु कामधेनु कल्पतरु तद् सम, हे चिन्तामणिवत् जोई;
परसत पूरण होय मनोरथ, मनवांछित फल होई. हो सन्तो...१
गुरु महिमा मोटा जन जाणे, माणे विरलाजन कोई;
अशक धरी रस प्याला पीवे, जन मत बाला होई. हो सन्तो...२
भया मतवाला मस्त दीवाना, त्रणावत् जग जोई;
साम्रथ गुरु शिर पर ही बिराजे, ताते डरु नहि कोई. हो सन्तो...३

भाग्या डर भर जनम मरण का, सुख सागर विलसोई;
उत इत सभर सुधारस सिंधु, झीलंता जन मीन होई. हो सन्तो...४
आनन्द कंद करुणामये कायम, श्रीमत् कुवेर सत् सोई;
दास नारण कहे ज्यौं बलिहारी, चरण कमल चित्त प्रोई. हो सन्तो...५

गोड़ी पद ८

गुरु चरनन का उपासी, हो सन्तो,
गुरुचरनन का उपासी;अवर न चित्त में आशी. हो सन्तो. टेक....
कोई तीरथ व्रत जप तप कर ही,
कोई तजी अन्न उपवासी;

कोई कंदमूल दूध पीवे फराळी,
यौ जित तित मतरासी. हो सन्तो...१
पूजत प्रेत पीर जजत प्रीतकर,
जन वश करन की आशी;
मंत्र जंत्र वश करन विधि सब,
मारन मोहन के तपासी. हो सन्तो...२
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर शक्ति,
कोई नर ज्योत उपासी;
दश अवतार अशक पति माने,
निजपति जोया न तपासी. हो सन्तो...३

निगम चतुर खट शास्त्र विलोके,
कुरान पुराण मत ग्रासी;
बिन मोर सदगुरु मुक्ति न कबहुं,
अनंत पुरुष की ज्यों बासी. हो सन्तो...४
आद्य अंत ओरु मध्य चराचर,
जबसे सृष्टि उपासी;
यामे मोक्ष मळे नहि मुकरे,
बीन गुरु बोध समासी. हो सन्तो...५
तन मन धन कदम पे धरना,
मन कर्म वचन की आसी;

श्रीमत् कुवेर के चरण कमल पर,
दास नारण बल जासी. हो सन्तो...६

गोड़ी पद ९

श्रीमत् कुवेर गुरु मेरा, हो संतो, श्रीमत् कुवेर गुरु मेरा;
पायो चरण कमल सुख शिरा. हो सन्तो. टेक
ज्यौं सूर तेज सकल पर सरखा,
समस्त द्रिघन पे नेरा;
अंध आदितकु किस विधि जाणे,
खोले लोचन सब हेरा. हो सन्तो...१

गुरु सूर में द्रिघन कहावुं,
चन्द्र गुरु में चकोरा;
गुरु अरणव सलिता मम पदवी,
गुरु घन स्वांत मम सेरा. हो सन्तो...२
गुरु चंदन मम सरप पुराणा,
निशदिन झरत शरीरा;
अनंत कल्प कर्म अनल अंग में,
प्रसत हरत विख हीरा. हो सन्तो...३
शरद ऋतु घन गुरु छीप मम सोई,
प्रीते परमानंद पुरा;

व्रेहवंत लग्न हुल्लास हमेश जिनुं,
निपजे मूगत महा नूरा. हो सन्तो...४
साकरखोरु खग गुरु मम शल्या,
करत सकर भई नवेरा;
रहे वितरेक जमतमही अनादु,
मीलत नां निजपद सेरा. हो सन्तो...५
गुरु हुमाहु छाया करुणाकर,
दीया ज्ञान अमल अनेरा;
श्रीमत् कुवेर कृपानिध्य स्वामी,
दास नारण जन तेरा. हो सन्तो...६

गोड़ी पद १०

प्रगट परमगुरु भानु, जगत में प्रगट परमगुरु भानु;
जेनी किरण ज्ञान पसरानु, जगत में प्रगट. टेक
गति परकाश अचरचर बुजत,
सुझ परे निज ज्ञानु;
अंशी अंश सकल के कर्ता,
शरणांगत सुख दानु. जगत में...१
निज शरणानुं सुख अपरबल,
बलवंत धणीनुं बानु;

महाद् मोज प्रिये पतिकु जो लागे,
स्वेत वेद विदवानु. जगत में...२
छूटे विनता दीनता पतिवश,
जश जिनु जग विखरानुं;
आलोक ओरु परलोक प्रीये अति,
गति अनुभव दे दानु. जगत में...३
श्रीमत् कुवेर शरण सुख जेता,
लहे शिष भये ते सुजाणुं;
नारणदास आश पद रज की,
तन मन धन अरपाणुं. जगत में...४

संध्या साखी

संध्या समरण आरती, भजन भरोसे दास;
मनसा वाचा कर्मणा, कर गुरुचरण निवास. १
गुरुकी कीजे बंदगी, कोटि कोटि प्रणाम;
कीट न जानत भृंगकु, सोई करले आप समान. २
गुरु मूरत मूख चंद्रमा, सेवक नेंन चकोर;
अष्ट पहोर निरखत रहे, सोई गुरु मूरत की ओर. ३
चार चीन हरि भक्त के, प्रगट देखावन देत;
दया क्षमा और दीनता, पर दुःखकु हर लेत. ४

धनवंता जुग में घणा, रूप रंग मन मोट;
कहे कुवेर नेमी घणा, मन मेळुकी खोट. ५
मन मेळु जबही मीले, आतम तत्त्व विचार;
तन मन सोंपी दीजीये, वाके शरण मोजार. ६
तन मन सोंपी शिषकु, रहो सदा लोलीन;
कहे कुवेर अंतर नहि, जैसे जलमां मीन. ७
ज्ञान मीन का मच्छ को, संग करे जन कोई;
कहे कुवेरा तो मिले, पेर पीवन की तोय. ८
ज्ञान मीन याहां सतगुरु, जो कोई शरणे जाय;
कहे कुवेर कळ देत है, जीव परमपद पाय. ९

सुध्धि को समझे नहि, कथे बादलु ज्ञान;
अळतो चढे न अंग ने, कुवेर तक्र ने पान. १०
सुरिनर मुनिजन देवता, ब्रह्मा विष्णु महेश;
कहे कुवेर गौलोक ल्यौ, जेठी तक्र आ वेश. ११
खटनव ने दश अष्ट ल्यौ, चारु वेद चरास;
व्यास वलोवण छाशनुं, पीवत जक्त उपास. १२
रामचन्द्र वशिष्टकु, कर्ता पण गुरु किन;
चौद लोक भांगे घडे, गुरु आगे आधिन. १३
कहो वशिष्टे क्या दिया, कर्ता को उपदेश;
ए अंदेशा सर्व ने, सुणो कहुं संदेश. १४

पिता बुंद शिर गर्भ की, जो न लहे जन कोई;
के राजा के रंक ही, खरा अजाण्या दोई. १५
ऐसे कैवल अंश के, जीव ईश्वर अवतार;
कहे कुवेर सतगुरु विना, कोई लहत नहीं पार. १६
चौद तबक जीनुं शिर पर, और चौद उपछांड;
मध्य महेल कैवल कुल, सुघड सभोम सघाड. १७
ते कैवल खुद खावन, अखिल जीवन किरतार;
कहे कुवेर दरशावहु, जो जन होय हमार. १८

संध्या आरती

पहेली आरती प्रेम हुलासा,
अनंत कोटि ज्यां करत विलासा...१
आरती करत निगम हरिदासा,
हरि हरि अगम अगोचर अविगत वासा...टेक
दूसरी आरती दिरघ मूरत की,
देव सकल दिव्य मंगल मूरत की. आरती...२
तीसरी आरती सकल सुमत की,
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर पत की. आरती...३

चौथी आरती सकल चराचर,
प्रणव पेच जेही रही भराभर. आरती...४
पंचमी आरती परमपुरुष की,
सकल साज कळ करन दूरस की. आरती...५
षष्टमी आरती सगुन मूरत की,
मच्छ कच्छ व्याघ्र वैराह संमत की. आरती...६
सप्तमी आरती सरल शकत की,
व्यापक वित्त चर अचर जक्त की. आरती...७
अष्टमी आरती अंजन आर की,
परम पुरुष अविकास करस की. आरती...८

नवमी आरती नव निध सिध की,
सकल सृष्ट रध पुरित सनिध की. आरती...९
दशमी आरती आद्य पुरुष की,
छेक छेवट पति परम उरस की. आरती...१०
ज्यांही परन्तु अंतु नहि कोऊ कित,
निज कैवल कारन बिनु उत इत. आरती...११
जिनके शुद्ध संकल्पे सलप में,
अखिल लोक उपजाये पलक में. आरती...१२
कहे कुवेर अनेर आरत की,
भव उतपन अबलग न सारत की. आरती...१३

संध्या स्तुति

सस्वयंग सदपदं, सर्व मोक्ष नायकम्;
अद्वैतंग अनुसुतं भववितंग ईश्वरे. १
तत्त्व वेताय तद्वतंग, समृथाय साक्षी यंग;
मंगलाय महाद् गतंग, अहम् नमामि प्राणपते. २
देवाधीयंग चैतनंग, यद् लोकंग सहीतयम्;
व्यापीतंग विश्वयंग, अकले दंग अनुरणे. ३
नभगतंग अनुभवे, न वारपार अंतयंग;
सर्वग्ने स्वच्छंदनंग, जय जय श्री कुवेर कैवलम्. ४

पोढण आरती

पोढ़े सुख सेज श्री महाराज, करुणासागर राज; पोढे...टेक
संतन के सुखदायक लायक, नायक सजन स्वेराज;
शोभा सुंदीर अति अनोपम, षोडश चिन धरे साज. पोढ़...१
कला खटदश विभूति पुरण, परमगुरु जग काज;
लाये लक्ष अलौकिक अनुभव, सुरगति नांही समाज. पोढ़े...२
नव घनश्याम स्वरूप स्वामी, दामी कहत दल दाज;
तेजपूंज प्रकाश पावन, करत रहत जन लाज. पोढ़े...३
चन्दन सेज जडित्र सोव्रण, पुष्प पिछोडी बिछाज;

अत्तर अरग की लपट लगावत, सुगंध केसर ताज. पोढ़े...४
सेवा करन सब सुर आये, संत सजन को समाज;
आनंद को अति होत कोलाहल, हरखे गरीब नवाज. पोढ़े...५
श्रीमत् कुवेर सब दास को दल, देखी उचरे अवाज;
नारणदास आश पद रज की, पूरे पूरण काज. पोढे...६

जयविधि

आद्य सक्रत स्वराज करुणेश कैवल..

...सत् कैवल साहेब.

भोजन समय की धुन

करम भरम जाकु नहि भेदत,
अक्षर बावन नहि लखे;
गुणातीत अतीत अमापक,
साक्षीवंत सतंत पखे...१
जप हो जन हंसा,
कैवल जापजही पद अजर अखे. टेक
जाथे होत सकल सब उत्पन्न,
जीनु चैतन अंकुर विखे;

सो अंकुरधर अविगत पति,
भुगतत भोग अनंत मुखे. जप हो...२
जैसे शून्य सरल घट मठ,
पट वट नहि व्राध्य उपाध्य पखे;
तेसेही कैवल अंश अरोकित,
व्यापक विश्व विशे नां धखे. जप हो...३
सूक्ष्म स्थूल कारण महाकारण,
परमकारण पद परम लखे;
ता पर कैवल धाम सनातन,
कोईक जवरला जाणी शके. जप हो...४

अजहद जहदाजहद् लक्षण लक्ष,
पक्ष नहि तहां कहां सुरत रखे;
सो तो सर्व वर्जित तित उत इत,
चैतन द्रष्ट जीनु ओळखे. जप हो...५
अकल स्वरूप अखंडित अनुसुत,
परस परे गुरु लक्ष पखे;
अद्वैत आप अमाप माप होई,
भासही विश्व विलास विखे. जप हो...६
आद्य अंत मध्य पुरुष पुरंजन,
अंजन रहित नां भवित भखे;

अद्‌भुत वस्त सदोदित सदपद,
ता अनुभव रस संत चखे. जप हो...७
वारपार विनु सहित समलपद,
विमल विलोकन रोक दखे;
शुध्य समरस रस ठस दसु दसा सजा,
कुवेर सोये ताणी सोड सखे. जपहो. ८

जयविधि

आद्य सक्रत स्वराज करुणेश कैवल..

...सत् कैवल साहेब.

कथा स्तुति १

मंगलाचरण

ऊँ प्रथम प्रणाम धाम जीनुं सकल परापर;
सरल जाकी शक्त व्यक्त ब्रह्मांड सकल धर. १
जय जय कैवलनाथ, सनातन सर्व किरतारन;
अखिलानंद अविनाश विलासिक, विविध विधारन. २
लोक चतुर्दश द्वंद फंद, फन करन सधारण;
विविध भात्य गुण ग्रंद वृंद, विध अलग उदारन. ३

अगणित इण्ड कटाक्ष पाक्ष, वसु तम पद परम;
अलंग सलंग एक तास, आश कोहु जाणे न मरम. ४
हंस निवासन धाम धणी तुम पुरुष पुरातन;
नमो नमो निरवाण प्राण पति, सचर समासन. ५
प्रकृति बिनु धन्य पुरुष पलक में, खलक उपासक;
आन्य धाम पतिदेव, जुगल शक्ति तन आशक. ६
तब देवन के देव सकल शिर हो तुम कैवल;
साक्षीवंत सुत सलंग प्रौढ़ पद पुरुष एकलमल. ७
जय करुणामय कंथ अंत मध्य आद्य परापर;
हंस रूप स्तुति कुवेर निज ग्रंथ करन स्वर. ८

दोहा

मंगलाचरन प्रथम एही, धरन सजन उर ध्यान;
अब ग्रंथन आरंभ हु, सुन हो संत सुजान. १
लोक असंख्य उत्पन्न गति, सप्त द्वीप सुरधाम;
सो सब ग्रंथ में भाखहुं, विविधी भात्य गुण ग्राम. २
सकल अंग भिन्न भिन्न गति, अर्थ बोध शुभ सार;
कहे कुवेर करके कहुं, संशे हरन भवपार. ३

जयविधि

आद्य सक्रत स्वराज करुणेश कैवल..

...सत् कैवल साहेब.

कैवल कर्ताकी स्तुति

कैवलं चीदेनं अव्येनां वयनं, द्विघनं लघुयं अमोहं अमस्तु. १
निरालं नारायणं अहं न व्रणेयं, नयेति नर्णेयं प्रणायं परंतु. २
जपेनं जपायं कायं नं मयायं, मनाती मगोयं स्वयं तम समस्तु. ३
जाहा न धाता ध्येयं नं विछंद, विनय जे करोती विवर्जित वस्तु. ४
विधिवै वेदंतं अचंत्ये नचंतं, सुनाती सनातं जे नाथ अनंतु. ५
अगाधं बोहोधं लहे जन महादं, कुवेरं तेयं मम नमामि नमस्तु. ६

कथा स्तुति २

ऊँ वंदु गुरु चरण शरण, साम्रर्थ्य किरतारन;
जीनुं मानत जुग ईश धीश, दशु शिर सरदारन;१
सकल देवन के देव भेव, वित वरजीत विलोकहु;
सर्वातीत सर्वज्ञ अंग, अनुभव अविलोकहु. २
प्रथम अंग चर चेन येन, धरे विपु विलासक;
करत निवास जन संत सुखद, निज भोवन सुधायक. ३
दिव्य तनु घनश्याम, बदन पर चन्द्र बिराजित;
द्विधन कमल दधी माहांय, कृपानिधि सुरत निघारीत. ४

चरण चिन बरन्यहु संत सहु, सुणो सजन जन;
मंगळ करन विघन हरन, धरत ध्यान पावन करन. ५
करुणानिध्य भगवान करुणा करी, जग पर घाडी;
द्वैत मदन मन मोद अंश रखी, फेरी सब झाड़ी. ६
श्रीमत् कुवेर शरण प्रणाम, करु कर जोरी;
नारणदास स्तुति करुणाकर, मति मम भोरी. ७

दोहा

मंदमति मम जाण के, बसो हृदय में आय;
इच्छा अन्तर उपनी, गावा गुण महिमाय. ८

मूंगे यौ इच्छा करी, में टेरुं चौदेई लोक;
पंगु मनोरथ यौं करे, चढु मेरु ये फोक. ९
सजाणकु शी विनंति, सर्वज्ञे साक्षात;
नारणदास निमित्त मात्र, आरोपण वचनात. १०
श्रीमत् कुवेर करुणा करी, तब करुं अक्षर की छाण्य;
ज्यौ गांधर्व बाजा विषे, बजावे तेसी वाण्य. ११

जयविधि

आद्य सक्रत स्वराज करुणेश कैवल..

...सत् कैवल साहेब.

श्रीमत् करुणासागराष्टकम्

विश्वेश्वराज्ञां प्रणतो गृहीत्वा। य आगतः कौजनतारणाय;
नृ5यो नृरुपेण ददाति बोधं। नमामि देवं करुणार्णवं तम्. १
अहोजना बोधत विश्वनाथं। तदुक्तधर्म च समाचरंतं;
इत्याह यो वै विहरन् पृथिव्यां। नमामि देवं करुणार्णवं तम्. २
यो देशनाया समये समर्थो। द्रष्टांत सिद्धांत समेत वाक्यैः;
सद् भयः सुबोधं विमलं ददानो। नमामि देवं करुणार्णवं तम्. ३
हिंस्त्रैर्निरी श्वैव्यभिचारीभिश्च। नीते कुवा1यैः कृपथे नृलोके।
येनेशभक्ति गदिता सधर्मा। नमामि देवं करुणार्णवं तम्. ४

समृध्धृतः प्राकृत वैदधर्म। संस्थापितो येन च कर्तुवादः
सुतर्कवा1यैर्निहतः कृतर्को। नमामि देवं करुणार्णवं तम्. ५
सदबोधदा यत्कृतबोधग्रंथा। निरुपितो येन च पुण्यपंथाः
निवारिता येन च जीव हिंसा। नमामि देवं करुणार्णवं तम्. ६
अध्यात्मशास्त्रस्त्रवरेण लोके। छिन्ना अविद्या भव जीवदोषाः
आविष्कृता येन च कर्तुभक्ति। नमामि देवं करुणार्णवं तम्. ७
सदा प्रफुल्लानन पंकजो यो। महीतटे गुर्जरसंज्ञदेशे।
विराजतेडनंतगुणो गुणज्ञां। नमामि देवं करुणार्णवं तम्. ८

जयविधि

आद्य सक्रत स्वराज करुणेश कैवल.....सत् कैवल साहेब.

ज्ञान सम्प्रदाय के संत और अनुयायी के लिए बाह्य चिह्न-तिलक

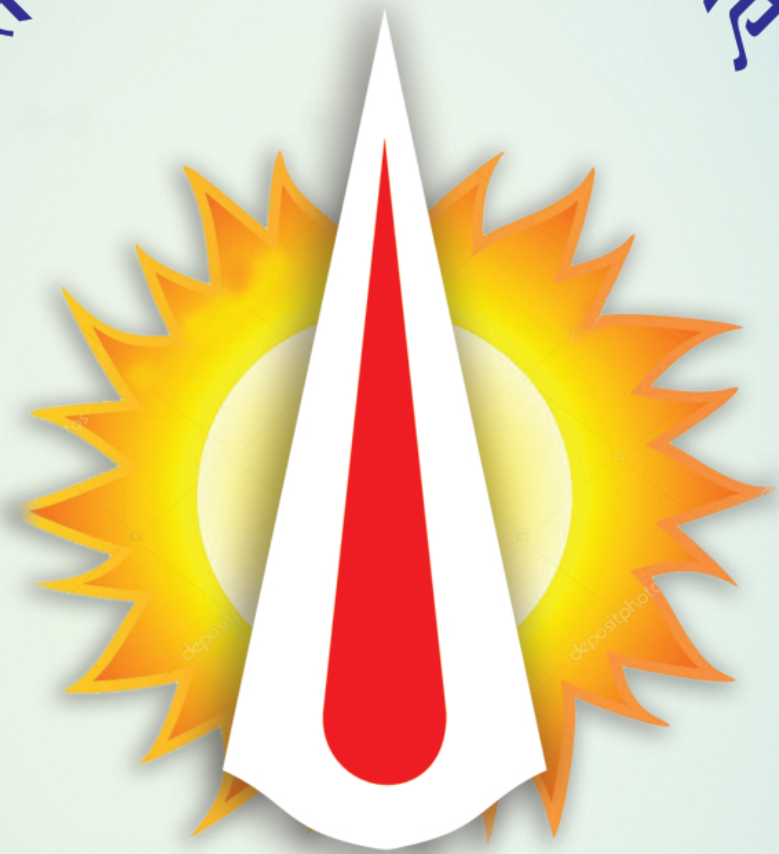

कहु जीनुं वरण तिलक रंग वेशा, रक्त श्वेत उभय अणि रेषा;
अब तुम संत सकल मम दासु, धरो एही तिलक निशंक विसवासु.